प्र०1 नैतिकता से क्या अभिप्राय है?

Ans: प्रत्येक कथा मे जो नैतिक बात कही है वह नैतिकता है। और कथा के बीच मे कथानक रूढ़ियों से कथा को आगे बढ़ाया है। जैसे स्वप्न आना शाप देना पूर्नजीवन करना इत्यादी लोक रूढ़ियों का पालन है। जिसे कथा बन्धी बंधाई चलती है। अर्थात कथा मे एक रोचकता दिखाई देती है। विक्रम जहाँ निर्णय देता है वह नैतिकता है। बैताल जहाँ प्रश्न करता है? वह नीतिकता है को उजागर करने को विक्रम से कहता है। इस प्रकार इस "बेत्ताल पच्चीसी" मे सभी कथाएँ कथानक रूढ़ियों से बन्धी है और नैतिक पक्ष को उजागर करती है।

प्र०2 बैताल कौन है (था)?

Ans: बैताल विक्रम को नीतिगत बाते रखता है। और नैतिकता के पक्ष को उजागर करने वाला है।

प्र०3 विक्रम कौन था?

Ans: विक्रम उज्जैन नगर का तात्कालिक राजा था?

प्र०4 वात क्या है?

Ans: वात के अभिप्राय से मतलब कथा है और प्राचीन रूप वार्ता रहा है और आधुनिक रूप मे कहानी का रूप है इस वात साहित्य मे अनेक कथाएँ वात के माध्यम से लिखी गयी है। कि इसी भाँति बेत्ताल पच्चीसी मे विक्रम और बेत्ताल की बातो को लिखा गया है। चूंकि यह पच्चीसी देवीदान संस्कृत से अनुदित है। और इस पच्चीसी मे पच्चीस कथाएँ या वात विक्रम और बैताल से सम्बन्धीत है। इसमे बेत्ताल विक्रम को नीति की बाते रखता है और विक्रम से नैतिकता को उजागर कराता है। अर्थात विक्रम नीति के लिए एक प्रसिद्ध राजा रहा है। और बैताल उस नीति से सम्बन्धीत प्रश्न पूछता है तो विक्रम प्रति उत्तर देता है। कथा के बीच में लोक रूढ़ियों और

Scanned by CamScanner

लोक विश्वास के द्वारा कथा को आगे बढ़ाया जाता है। इस प्रकार इस बैताल पच्चीसी मे जो कथाएँ संग्रहित है वो लोक रूढियो पर आधारित और नैतिक पक्ष से परिपूर्ण है।

(बैताल पच्चीसी की वार्ता)

प्रथम कथा मे दक्षिण दिशा के प्रधानगर के विक्रमादित्य उज्जैनी के राजा हुए और राजा के सभा के व्यक्ति भी बैठे हुए है। तब एक जोगी आम फल लाता है और राजा को देता है। तब राजा उन फलों को इकट्ठा करता है। तब एक दिन बन्दर आम को खाता है। उसमें से रत्न निकलते है। जब राजा जोगी से सब आम मगंवाकर रत्न निकालता है। राजा जोगी को अपनी बात बताता है और एकान्त मे जाकर कथा कहते है और राजा वाराणसी नगर वहा प्रतापमुकट नाम का राजा था उसके मुकुट शेखर नाम का पुत्र था उसका प्रेम पद्मावतीनाम की युवती से विवाह होता है। जो पद्मावती कर्णकुंज नगर की दंतसेन राजा की कन्या थी इस प्रसंग मे राजकुमार और राजकुमारी की बीच प्रेम प्रसंग चलता है और दोनो ही एक दूसरों की बात को समझते है कुंवर के साथ उसका कामदार है और पद्मावती के साथ मालिन है जो बात को आगे बढ़ते है और एक दिन पद्मावती जेवड़ी मालिन को देती है। और वो जेवड़ी राजकुमारी राजकुमार के पास पहुंच जाती है। उसका पता लगाने के लिए राजा राजकुमार को और कामदार को भी बुलाता है। क्योंकि वो दोनें योगी बनकर श्मशान मे बैठे हुए थे और उन्होने बताया कि एक त्रिशुल राजकुमारी को लगा है जिसके कारण यह जेवड़ी मिली है। अर्थात राजकुमारी तो भाग गयी पर जेवड़ी हाथ मे रह गयी जब इस बात का ज्ञात होता है तो राजा राजकुमारी की बात को समझ जाता है। पर राज कुमारी के त्रिशुल लगने का पाप किसको लगेगा उस प्रश्न का उत्तर बैताल पूछता है। तब विक्रम कहता है कि पाप राजा दंतवक्र को लगेगा जिसने बिना विचारे है त्रिशुल छोड दिया।

प्र० बैताल पच्चीसी की कथाओं मे नैतिक पक्ष उजागर हुआ है? उक्त कथन की पुष्टि कीजिए?

"बैताल पच्चीसी" की कथाएँ नैतिक पक्ष को उजागर करती है जहाँ कथा कि के अन्त मे राजा विक्रम से बैताल से प्रश्न करता है और राजा विक्रम अपना निर्णय सुनाता है वह नीति पर आधारित है। प्रति कथा में बिना विचार कर्म को करने वाला पाप कर्म पापी होता है। उक्त कथन प्रथम कथा में उजागर होता है व दूसरी कथा मे एक कन्या के तीन वर आते है। और तीनो ही लड़ने लगते है तब सर्प आता है और कन्या को डस लेता है। जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। पुर्नजीवित करने के लिए मंत्र साधना कि जाती है। दूसरा गंगा मे अस्थियाँ प्रवाहित करने जाता है। तीसरा समाधी लगाकर बैठ जाता है। जब शमशान पर युवती पुन जीवित हो जाती है। तब राजा विक्रम से बैताल से पूछता है कि उन तीनों मे से इस युवती का पति कौन है? राजा नीतिगत निर्णय सुनाता है। जिसने पुर्नजिवीत किया है वह पिता के समान है। जिसने अस्थियाँ प्रवाहित की है वह पुत्र के समान है तथा जिसने साधना कि है वही उसका पति है।

③ इसी प्रकार तीसरी कथा मे एक राजकुमारी जो बहुत सुन्दर होती है। उससे एक पण्डित शादी करना चाहता है। लेकिन उसकी माँ उसको समझाती है। की पुरुष लोग बहुत मतलबी होते है। जब किसी पत्नि के बच्चा नही होता है तो वह दूसरी शादि कर लेते है। और शादि के कुछ दिनों के बाद ही दूसरी औरतों पर नजर डालते है एक समय की बात है कि जब पत्नि जवान हो जाती है और पति उसे लेने के लिए जाता है। तो पिहर से अच्छे गहने पहनाके विदा करते है और रस्ते में उसका पति गहने खुलवाकर ले लेता है और पत्नि को कुएँ मे डाल देता है। एक बार पत्नि रात को मिलने अपने प्रेमी के पास जाती है। और वहाँ पर उसके प्रेमी के तीर लग जाता है। फिर भी वो मिलते है। और पकड़े जाते है। तो बैताल राजा विक्रम से प्रश्न पूछता है कि इसमें अपराधी कौन है। तो राजा कहता है। इसमे पुरुष महा अपराधी है। क्योंकि उसने छोटी सी बात का बतंगड़ बनाया था। यहाँ यह नीति की बात है।

बात को हसी में कह देता है। कथा का प्रवाह इस प्रकार है कि हास्य व्यंग्य

Scanned by CamScanner

के द्वारा या मनोरंजनात्मक दृष्टिकोण को बात के प्रस्तुतीकरण के आधार पर कथानक रूढ़ियों के माध्यम से जो नैतिक पक्ष को उजागर किया है। वह इस बैताल पच्चीसी में पाठक को बांधे रहता है। अर्थात कथा को पढ़ने की रुची पैदा करता है और मनोरंजन भी हुआ है।

(4) इसी प्रकार चौथी कथा मे वर्द्धमान पुर नगर मे सुन्दरसेन राजा राज्य करता था उसकी सभा में बिरबल नामक व्यक्ति आया और कहॉ मुझे अपने यहॉ नौकरी पर रख लो आपके राज्यो को बहुत अच्छी तरह से सम्भालूँगा। तब एक दिन गॉव के बाहर जाकर देखा एक स्त्री रो रही थी। तब राजा ने बीरबल को देखने को कहा और पिछे वह भी गया तो उस औरत ने कहा अब राजा की मृत्यु हो जायेगी। तुम्हारी पत्नि और पुत्र को बलि चढ़ाओ तो वह बच सकता है। बिरबल ने यह बात अपनी पत्नि से कही पत्नि और पुत्र बली चढ़ने के लिए तैय्यार हो गये तब राजा ने सब बाते सुनली थी तो राजा ने देवी की पूजा की और दोनो को जिंदा कर दिया तब बैताल ने पूछा इनमे से सबसे सर्वाधिक अच्छा कौन है तो विक्रम ने कहा कि राजा सर्वाधिक अच्छा है क्योंकि उसने बिरबल के पुत्र और पत्नि को बराबर माना

(5) उजेनी नगरी में महाबाहु नाम का राजा था जिसके हरदत्त नामक एक ब्राहण था उसकी पुत्री थी मदनावती उसको शादि करवाने के लिए ब्राहण को राजा ने दक्षणाध्या पति पार्श्वे भेजा हरदत्त राजा से मिला। उसको हरदत्त ने कहा जिसमे ज्ञान गुण ज्यादा होगा उसी को बेटी दूगां। तब एक ब्राह्मण ने कहा मे ज्ञानी हूँ मैंने रथ बनाया है। तब एक ब्राहण ने कहा मे ज्ञानी हूँ उसने कहॉ मै तीनों काल की बात जानता हूँ तीसरा मिला उसने कहा मे धनुष विद्या जानता हूँ। तब तीनो आए विवाह का समय हुआ तब एक राक्षस आया और लड़की को उठाकर लेगया तब ज्ञानी ने कहा कि वह राक्षस उसे विन्द्याचल लेगया है तब दुसरे ज्ञानी ने धनुष विद्या से उस राक्षस को मारा और तीसरा ज्ञानी उस रानी (लडकी) को रथ पर बैठा कर घर लाया) तब बैताल ने पूछा राजा विक्रम ये लड़की किसको देनी चाहिए तब विक्रम बोला रथी और ज्ञानी तो उपकारी हुए और जिसने बाण से राक्षस को मारा वो उसको मिलना चाहिए

(6) छठी कथा मे एक राजा मंदिर मे जाता है। वहॉ पर उसे एक सुंदर कन्या

Scanned by CamScanner

DATE: / /

दिखाई देती है। और वो मंदिर मे देवी से प्रार्थना करता है कि अगर इससे मेरी शादि हुई तो मै तुम्हारी कमल पूजा करूंगा। फिर राजा ने विवाह किया तब राजा मन्दिर के अंदर गया और अपनी पत्नि और मित्र को गाड़ी मे बिठा कर गया। तब मित्र ने स्त्री से कहा तुम बैठो मै देखकर आता हूँ। तब मित्र देखता है कि सिर धड़ अलग पड़े है तो उसने सोचा कि वो सोचेगी उसी के काम होंगे। अन्त तो मित्र पूजा करने लग गया। जब स्त्री अंदर आई तो दोनों मरे पड़े थे तो वो कमल पूजा करने लगी तब देवी प्रकट हुई और कहा तुम इनको जोड़ दो मै जान डाल दूंगी तो उस स्त्री ने जल्दी में उसके पति के धड़ को मित्र के मास्तिष्क से जोड़ दिया। तब दोनों खड़े हुए और लड़ने लगे तब बेताल बोला स्त्रि किसकी रहेगी। तब विक्रम बोला जिसका सर उसी की स्त्री होगी।

(7) एक राजा के कन्या थी जो चौसठ कलाएँ जानती थी और चतुर थी उसके स्वयंवर के लिए बहुत राजकुमार आए उसमे से एक ने कहा मुझमे बड़ा गुण है एक ने कहा मै बहुत भाषाएँ जानता हूँ। एक ने कहा मै शास्त्र पढ़ा हुआ हूँ एक ने कहा मै बहुत बलशाली हूँ। बेताल बोला कन्या किसको देनी चाहिए विक्रम बोला बलवंत को देनी चाहिए क्योकि भाषा का ज्ञान रखने वाला ~~ब्राह्मण~~ वैश्य कहलाता है। शास्त्र का ज्ञान रखने वाला ब्राह्मण कहलाता है। और बलवंत क्षत्रिय कहलाता है

(8) इसी प्रकार आठवी कथा में भी राजा का चाकर नदि पर गया वहा देवी के दर्शन किये तब एक नायिका भी वहाँ देवी की पूजा करने आई तब वह राजा के नौकर को पसंद आ गई। तब उस राजपुरुष ने राजा से यह बात बताई तब दोनो वापिस मंदिर मे आये। तब वो नायिका भी वहा आयी। तब राजा ने कहा मेरा चाकर है तु इससे विवाह कर तो नायिका ने कहा मै तो तुमसे प्रेम करती हूँ। तो राजा बोला ये मेरी आज्ञा है। तब राजा ने अपने चाकर को शादि करवाकर ले आया। तब बेताल ने राजा विक्रम से पूछा इसमे सबसे उत्तम पुरुष कौन है। तब विक्रम ने नीति की बात बताई कि राजा इसलिए नहि है क्योंकि चाकर ने पहले राजा पर उपकार किया था।

(9) इसी प्रकार नवी कथा मे राजा का पुत्र सोमदत्त ने एक कामसेना नाम

Scanned by CamScanner

की कन्या को देखी तब उसने उस कन्या से कहा अगर तुम मेरे साथ सम्भोग नही करोगी तो मै तुम्हारे ऊपर मरू तो कन्या ने कहाँ मै कुँवारी हुँ। इसलिए पाप लगेगा। तब कन्या ने कहा में विवाह करूगां उससे पहले तुझसे मिलने आउंगी उसके बाद विवाह के बाद कामसेना ने अपनी पति से यह बात बताई तो उसके पति ने कहाँ तुम अपने सोमदत्त से मिलकर आओ। तब जाते समय रास्ते मे चोर मिला उसने उसे पकड़ लिया। तो काम सैना बोली मै सोमदत्त के पास जाकर तुमसे मिलुंगी तब काम सैना सोमदत्त के घर गयी तब सोमदत्त ने कहाँ तुम धन्य हो तुम और तुम्हारे पति तब सोमदत्त ने अपनी बहन बना लिया। आते समय रास्ते में चौर मिला तो उसने कहा इतना होते हुए अगर मै तुम्हे सताउंगा की तो मुझे धिक्कार है। तब बैताल बौला इसमे से सबसे सच्चा धिक्कारी और उत्तम कौन है? तो राजा विक्रम ने नीति परक कहा की चोर है क्योकि उसने किसी भी डर के नाहि होने पर भी कामसैना को छोड़ दिया था।

(10) दसमी कथा मे एक राजा अपनी एक रानी को लेकर स्नान करने गया वहाँ दोनो जल क्रिड़ा कर रहे थे तब एक कमल सखी आठी रानी के हाथ लगाया। तब छिंटे आये तब रानी के पावो पर छिंट पड़े और उसके पॉव मुड़ गये फिर निचे गिर गयी फिर दूसरी रानी के चन्द्रमा कि किरणे पड़ने से छाले होगये और तीसरी रानी के हाथ दुखने लगे तब बैताल ने पूछा सबसे कमाल की रानी कौन सी है तब राजा बोला जिसके हाथ दुखने लगे वो रानी।

(11) इसमे एक राजा का प्रधान तीर्थयात्रा करने जाता है। चार महिनों के लिए रामेश्वर गया वहाँ जाकर उसने श्री राम, सीता, हनुमान जी के दर्शन किये थे। तब समुद्र मे से कल्पवृक्ष एक पलंग सहित बाहर आया। जिस पर एक देवंगना दिखी तब प्रधान ने आकर राजा से यह बात बताई तब राजा अंधेरी चवदश के दिन वहाँ गया और तब देवगंना दीखी और राजा ने कहाँ कि तु मुझसे विवाह कर ले। तब उसने कहाँ कि अगर तु मुझे अंधेरी चवदस के दिन छोड़ दे (छूना नही) तब राजा उसको अपने महल मे लाया। अंधारी चवदस के दिन एक राक्षस ने देवांगंना को पकड़ लिया। तब राजा ने राक्षस को मारा देवांगना ने कहा की यह मेरे पिताजी का श्राप था। जो आज पूरा हुआ। अब मै जारही हूँ लेकिन उसकी सारी

Scanned by CamScanner

त्रिया खत्म हो गयी क्योकि उसने मनुष्य का संग किया था। तब तो राजा बहुत खुश हुआ और जश्न मनाया तब उसका प्रधान भी आया और वह सब देखकर मरगया तब बैत्ताल ने पूछा कि प्रधान किसके कारण मरा तब राजा विक्रम ने प्रति उत्तर दिया कि प्रधान को यह सहज नहि हुआ की राजा के घर विद्याधरी स्त्री है।

(12) बारहवी कथा मे एक ब्राह्मण देवस्वामी जिसने एक ब्राह्मण की बेटी से विवाह किया तब दोनो छत पर सो रहे थे ब्राह्मणी को गर्मी बहुत लगी तो कपड़े उतार कर सो गयी थोड़ी देर बाद आकाश से एक राक्षस जा रहा था। उसने स्त्री को नंगी देखा तो वह उसको उठाकर ले गया। तब स्त्री के वियोग मे भटकता हुआ। पुरोहित एक ब्राह्मणी के घर गया। फिर पोखरादि पर स्नान करने गया तो उसको नाग ने काट लिया। फिर पुरोहित ब्राह्मणी के घर आया और ब्राह्मणी से कहा तुने मुझे जहर दिया पुरोहित मर गया तब ब्राह्मण ने ब्राह्मणी को घर से निकाल दिया।

तब बैत्ताल ने विक्रम से पूछा की ब्राह्मण का पाप किसको लगेगा। तब विक्रम ने नीति की बात बताई साँप तो जहरिला होता ही है और काटता ही है उसको पाप नहि लगेगा। ब्राह्मण अज्ञानी था और ब्राह्मणी ने भिक्षा दि थी। इसलिए ब्राह्मण अज्ञान थी इसलिए उसको पाप लगेगा।

(13) एक चोर चोरी करने जाता है वहाँ पर एक विधवा लड़की उससे मिलना चाहती है पर वो चोरी करके भाग जाता है। तब राजा के हुक्म पर चोर को पकड़कर उसको सुली पर चढ़ाने ले जाते है। वहाँ पर एक सुन्दर कन्या अपने पिता से कहती है। कि इस चोर को अपने घर ले आओ और बचालो तब चोर हसता है फिर रोता है तो बैत्ताल राजा से पूछता है कि चोर हसा फिर रोया क्यो- तब राजा विक्रम बताता है कि चोर यह सोचकर हसा की इतनी अच्छी सुन्दरी मेरे से विवाह करना चाहती है। और फिर इसलिए रोया कि मेरी पत्नि विधवा हो जायेगी?

(14) इसी प्रकार चवदमी कथा के अन्तर्गत एक ब्राह्मण ने तीज पर चन्द्रप्रभा नाम की एक राज कन्या को देखा तब उसको प्रेम हो गया। उसके बाद जब वो ब्राह्मण उसके विरह मे बेसुध पड़ा था। तब एक मूलदेव आये थे। उन्होने ब्राह्मण से कहा की राज कन्या तुम्हे मिल जायेगी तुम्हारी क्या जाति है। तब उसने कहा ब्राह्मण तब मूलदेव ने ~~तब~~ ब्राह्मण को सिद्ध गुटिका दी तब वह एक बारह बरस की राज

DATE: / /

कन्या बन गई। तब उसको लेकर मूलदेव राजद्वार गया और कहा की महाराज यह मेरी बहू है। रास्ते मे चोर मिल गये और उसकी पत्नि और बेटा खो गया इसलिए जब तक उनको ढूंढकर आता हू तब तक बहू को यही रखकर जाता हूँ। राजा ने बेटी से कहा इसे तुम्हारे कमरे मे ले जाओ। तब दूसरे दिन ब्राह्मण वधु ने पूछा कि तुम उदास क्यो हो। तब राज कन्या ने सारी बात बतलाई। राजकन्या ने कहा अगर तुम ब्राह्मण को मिला दो तो मै तुम्हारी दासी बन जाऊँगी तब उसने जेब मे से गुट्टी निकाली तब वो ब्राह्मण बन गया। फिर रात को पुरुष वेश मे और दिन मे स्त्री बनकर रहने लगा। तब राजकन्या गर्भवती हो गई। एक दिन मंत्री के बेटे ने ब्राह्मण वधु को देखा और पिता से कहा ब्राह्मण वधु से विवाह कराओ नही तो मै मर जाऊंगा। तब मंत्री ने राजा से कहा राजा नही माना फिर सभी मंत्रियों से प्रार्थना कि कि अगर इनका इकलौता बेटा मर जायेगा तो राज्य मे सभी में मनमुटाव हो जायेगा। तब ब्राह्मण वधु को दिया पर इस शर्त पर कि तुम्हारा बेटा एक बार गंगा जाकर आये उसके बाद ब्राह्मण वधु को छू सकता है। तब वो गंगा गया और दो पत्नियों ने आपस में बताएँ एक दिन उनका पति आ गया उसके बाद ब्राह्मण पुरुष वेष करके मूलदेव की गुफा मे गया और सभी बाते बताई। तब मूलदेव ने ब्राह्मण का वेष धारण कर और ब्राह्मण को अपना बेटा बनाकर ले गया और महाराजा से अपनी पुत्र वधु को मांगा और कहा अगर तुमने अपनी पुत्री को मेरे पुत्र से विवाह नही करवाया तो मै तुम्हे श्राप दे दूंगा तो फिर राजा ने विवाह करवाया।

(15) पन्द्रहवी कथा में एक राज पुत्र को जंगल मे शिकार खेलते हुए एक गरिब स्त्री रोती हुई मिलती है वो पूछता है कि तुम क्यो रो रही हो तब वो बतलाती है कि मेरा एकलौता पुत्र जिसको एक राक्षस खाने के लिए पकड़ कर ले गया है। तो राजकुमार

DATE / /

राक्षस से बोलता है कि तु इसको छोड़ दो और मुझे भक्ष दे तब उस स्त्री का पुत्र कहता है कि आप अपने को बली मत चढ़ाओ तब राज पुत्र कहता है कि मै क्षत्रिय हूँ। इसलिए मै इसलिए ऐसा नाहि करूंगा तो मुझे धिक्कार है। फिर राक्षस दोनो को छोड़ देता है। इतने बैत्ताल राजा विक्रम से पूछता है कि। हे राजा विक्रम इन दोनो मे सबसे श्रेष्ठ कौन है और राजा विक्रम की नीति की बात बतलाता है कि उस स्त्री का पुत्र श्रेष्ठ है।

(16) सोलहवी कथा मे राजा के एक सेठ था जिसके उन्मादनी नाम की बेटी थी जो बहुत ही सुन्दर थी सेठ ने कहा राजा आया ही इससे विवाह कर लो तब राजा ने एक पासवान को देखने के लिए भेजा कुछ लोगो ने पासवान को पैसे देकर झुठला दिया कि लड़की अच्छी नही है। फिर सेठ ने एक बलबार नाम के एक अच्छे लड़के से उनका विवाह करवाया एक दिन राजा शिकार खेलने गया जाते समय उसने उन्मादिनी को देखा उन्मादिनी ने भी राजा को देखा तब दोनों मे प्रेम हो गया और विरह मे खान-पिना छोड़ दिया फिर राजा ने पूछा यह कौन है सब पता लगाया बलबार ने भी अन्न को छोड़ दिया। राजा कहता है कि उन्मादनी को मै विवाह करना तो स्वीकारता और कुवारी होती तो स्वीकारता। राजा विरह मे ही मर गया इसके वियोग मे उन्मादिनी मर गयी और उन्मादिनी के वियोग मे बलधर भी मर गया। बैत्ताल ने पूछा दोषी कौन है? तो राजा ने कहा दोषी पासवान है और सराहने योग्य राजा था जिसने अपने शील धर्म को रखा।

(17) सतरहवी कथा मे एक राजा का पुत्र जगंल मे जाता है वहां उसे जोगी मिलता है। उसके वहाॅ भिक्षा का भोजन नाहि करता तब वह जोगी अपनी मंत्र शक्ति से देवांगना को बुलाता है। और महल रचना करता है फिर खाना खिलाती है। तब उसको प्रेम हो जाता है। और योगी से कहता है कि उस देवगंना को वापिस बुलाओं तब योगी गुरू उसे विधी बताता है। बिच मे वो अपने कुटुम्ब से मिलने जाता है इसलिए उसकी विद्या सफल नही होती है

(18) इस कथा मे एक राजा के लड़की होती है। फिर राजा की पत्नि मर जाती है। फिर राजा भी धनवती नाम की औरत को अपनी सात वर्ष की पुत्री को सौंप देता है। और सारा धन उसको सम्भलाकर मर जाता है। फिर धनवती उस लड़की को लेकर अन्धेरी रात मे निकल जाती है। तब रास्ते मे उसे चोर सूली पर चढ़ा हुआ मिलता है। धनवती उसे

Scanned by CamScanner

कहता है मेरे पास धन बहुत है इस
पूछती है कि तुम्हारी जान क्यों अटकी है तो चोर कहता है मेरे पास धन बहुत है इस
लिए अगर तुम इस पल से मेरा विवाह करवा दो तो मैं धन देकर मर जाऊं। लोभ की
मारी धनवती ने ऐसा ही किया और एक घड़ा भरकर मोहरे ली और घर आ गयी
फिर कुछ दिन बाद एक साधु आया फिर उसको एक दिन की एक मोहर देकर सौ दिन
तक घर पर रखलिया। उस लड़की के एक पुत्र हुआ उसको राजा के महल के
पीछे कुछ मोहरों के साथ कपड़े मे लपेट कर रख दिया। उसको राजा ने रख लीया
फिर राजा कुछ ही दिनों बाद मर गया। तब श्रद्धा मे वो बेटा पिण्ड दान करने लगा
तो पानी मे से तीन हाथ निकले पहला चोर का दूसरा साधु का तिसरा राजा का

इतने मे बेत्ताल ने विक्रम से पूछा की वो पिण्ड किसको मिलना चाहिए
तब विक्रम नीति परख बात बतलाता है कि चोर को मिलना चाहिए। क्यों कि चोर
से इस लड़की का विवाह हुआ और पैसो (मोहरों) से पुत्र हुआ, फिर बड़ा भी
मोहरो के मोल ही हुआ था।

(21) एक राजा के विष्णु स्वामी ब्राह्मण था, जिसके चार पुत्र थे। एक जुवारी, दूसरा
वेश्यारत, तीसरा, परस्त्रीरत, चौथा सुरापाणी चारो को उनको उनके पिता ने सिख
दी तब वाराणसी विद्या प्राप्त करने गये। आते समय जंगल में एक सिंह का
कंकाल पड़ा देखा। चारोंने एक एक करके अपनी विद्या का परिक्षण उस पर किया
एक ने हड्डियों को जोड़ा दूसरे ने मांस बनाया, तीसरे ने रोम सहित चमड़ी बनाई
चौथे ने उसमे जान डाल दी। तब बैत्ताल ने पूछा कि इनमे महा मूर्ख कौन है
तब राजा विक्रम कहता है कि जिसने सिंह मे जान डाली वही सबसे महामूर्ख है

(23) तेइसवी कथा मे एक धर्मज्ञ नाम के राजा के गोविंद नाम का ब्राह्मण था जिसके
चार बेटे थे सब शास्त्र मे वे पटु थे। एक ने कहा मे भोजन मै चतुर हूँ। मछली नहीं
लाऊँगा एक ने कहा मैं नारी चतुर हूँ, एक बोला मै शय्या चतुर हूँ। फिर राजा
तीनों की चतुराई को परखता है। और तीनों खरे उतरते है, और बैत्ताल पूछता है
है कि महा चतुर कौन है तो विक्रम कहता है। जिसको केस के बारे मे पता
पड़ता है।

19, 20, (22), 24, 25